वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 25 कुल पृष्ठ-12 **25 से 31 मार्च, 2021** दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 फा. शु.-12

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने लिया संन्यास अब बने स्वामी आदित्यवेश

2024 तक 200 नए संन्यासी बनाएगा आर्य समाज

– स्वामी आर्यवेश

संन्यास दीक्षा से पूर्व का चित्र

संन्यास दीक्षा के बाद का चित्र

आर्य जगत के तेजस्वी संन्यासी, महान नेता, युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 84वें जन्मदिवस के अवसर पर 13 मार्च 2021 को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली जिला रोहतक हरियाणा में आयोजित भव्य संन्यास दीक्षा समारोह में आर्य समाज के तेजस्वी, कर्मठ एवं समर्पित नवयुवक नेता सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान व मिशन आर्यावर्त न्यूज चैनल के निदेशक, हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी ने संन्यास की दीक्षा लेकर आर्य समाज में एक नये उत्साह का संचार कर दिया। दीक्षा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी। दीक्षा यज्ञ के ब्रह्मा वीतराग संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज तथा पौरोहित्य का दायित्व युवा विद्वान् डॉ. श्यामदेव जी ने संभाला। दीक्षा के उपरान्त दीक्षा गुरु स्वामी आर्यवेश जी ने उनका नया नाम स्वामी आदित्यवेश घोषित किया। दीक्षा का पूरा कार्यक्रम जहाँ उत्साह एवं उल्लास से ओत–प्रोत था वहीं कई क्षण अत्यन्त भावुकता प्रदर्शित करने वाले भी रहे। जब स्वामी आर्यवेश जी ने ब्र. दीक्षेन्द्र जी का अपने ओजस्वी शब्दों में उपस्थित जनसमूह के समक्ष परिचय प्रस्तुत किया और उनके इस त्याग को सर्वोच्च त्याग बताते हुए कहा कि –

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर।
हमें भी पाला था माँ–बाप ने दुःख सह–सहकर।
वक्ते रूखसत इतना भी न आये कहकर,
आंख से आंसू जब आये बहकर,
तिफ्ल उन्हें ही समझ लेना जी बहलाने को।।

ये पंक्तियाँ बोलकर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी, जो बचपन से ही एक स्वाभिमानी, निष्ठावान, चरित्रवान, तपस्वी एवं समर्पित व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन की समस्त सुख–सुविधाएं, ऐश्वर्य एवं अवसरों को ठुकराकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का संकल्प लेकर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। उनके संन्यास दीक्षा के इस निर्णय से समूचे आर्य जगत में नई ऊर्जा एवं उत्साह की लहर दौड़ गई है। अनेक नौजवान संन्यास लेने के लिए प्रेरित हुए हैं और आशा की एक नई किरण उनके संन्यास दीक्षा से आर्य जगत में प्रस्फुटित हुई है। स्वामी आर्यवेश जी के भावपूर्ण विचारों को सुनकर और ब्र. दीक्षेन्द्र जी के भावुकता भरे वक्तव्य को सुनकर उपस्थित जन–समूह की आंखें सजल हो रही थीं। लोग उन्हें अपनी शुभकामनाएं देने के लिए उमड़ रहे थे। भिक्षा के लिए जब नव–दीक्षित संन्यासी अपने हाथ में दंड और कमंडल लेकर लोगों के समक्ष पहुँचे तो लाखों रुपये उनकी झोली में डालकर आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए उन्हें अपना सात्विक सहयोग एवं विश्वास प्रदान किया।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी को अपनी शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद प्रदान करने के लिए आर्य जगत् के अनेक संन्यासी, विद्वान्, नेता एवं जनप्रतिनिधि दीक्षा समारोह में पहुँचे। मुख्यरूप से आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज अध्यक्ष शम्भूदयाल आर्य संन्यास आश्रम,

शेष पृष्ठ 10 पर

दीक्षा गुरु एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने संन्यास दीक्षा देकर ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य का नया नाम स्वामी आदित्यवेश किया घोषित

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी आदित्यवेश जी की संन्यास दीक्षा के उपरान्त गणमान्य महानुभावों के आशीर्वचन तथा उद्‌गार

ब्र. दीक्षेन्द्र जी का संन्यास आर्य समाज में नया उत्साह पैदा करेगा।

– स्वामी चन्द्रवेश जी

संन्यासी को ध्यान एवं साधना तथा समाजहित को सर्वोपरि रखते हुए मन, वचन, कर्म से कार्य करना चाहिए।

– स्वामी प्रणवानन्द जी

स्वामी आदित्यवेश जी का संन्यास युवा पीढ़ी को विशेष प्रेरणा देगा।

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी आदित्यवेश जी ने संन्यास की दीक्षा लेकर आश्रम व्यवस्था को मजबूती प्रदान की है।

– पं. माया प्रकाश

नव दीक्षित संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी सोशल मीडिया के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार को पूरे विश्व में पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करेंगे।

– चौ. हरि सिंह सैनी

स्वामी आदित्यवेश जी के मिशन को द्रुतगति से चलाने के लिए मैं उन्हें एक रथ (एलेन्ट्रा कार) भेंट दे रहा हूँ।

– वैद्य सत्यप्रकाश आर्य

स्वामी आदित्यवेश जी आधुनिक टेक्नोलॉजी के माध्यम से आर्य समाज की विचारधारा को पूरे विश्व में फैलायेंगे। इसके लिए मैं तन–मन–धन से उन्हें योगदान देता रहूँगा।

– विशाल मलिक

स्वामी आदित्यवेश जी ने संन्यास लेकर स्वामी इन्द्रवेश जी के स्वप्नों को क्रियान्वित किया है।

– स्वामी रामवेश

अपने भ्राता को आग्नेय वस्त्रों में देखकर असीम गर्व का अनुभव हो रहा है।

– बहन पूनम आर्या

अपने नाम सम सूर्य की तरह चमकेंगे विश्व पटल पर स्वामी आदित्यवेश जी।

– बहन प्रवेश आर्या

स्वामी आदित्यवेश जी एक निर्भीक व साहसी संन्यासी साबित होंगे।

– स्वामी नित्यानन्द जी

स्वामी आदित्यवेश जी सत्य की रक्षा के लिए हमेशा कटिबद्ध रहेंगे।

– स्वामी सम्पूर्णानन्द जी

स्वामी आदित्यवेश जी सामाजिक बुराईयों के खिलाफ हमेशा संघर्ष करते रहेंगे।

– आचार्य राजेन्द्र जी

अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं स्वामी आदित्यवेश जी।

– आचार्य हरिदत्त जी

स्वामी आदित्यवेश जी की कीर्ति देश तथा विदेश में फैले यही अभिलाषा है।

– स्वामी यज्ञमुनि जी

आर्य समाज के क्षितिज पर एक नये सूर्य का उदय हुआ है।

– स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती

स्वामी आदित्यवेश जी का तेजस्वी स्वरूप युवाओं को निरन्तर आकर्षित करता रहेगा।

– महावीर मीमांसक

स्वामी आदित्यवेश जी सही मायनों में कर्मयोगी हैं।

– माता मूर्ति देवी

होनहार विरवान के होत चीकने पात। इस उक्ति को सार्थक किया है स्वामी आदित्यवेश जी ने।

– माता वीरमति

स्वामी आदित्यवेश जी की कर्मठता तथा आर्य समाज के प्रति समर्पण अद्वितीय है।

– डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस.

स्वामी आदित्यवेश जी हरियाणा सहित सारे देश में आर्य समाज का नाम रोशन करेंगे।

– आचार्य डॉ. बलवीर

स्वामी आदित्यवेश जी ने सोशल मीडिया का प्रकल्प चलाकर आर्य समाज को नई दिशा प्रदान की है।

– डॉ. कृष्णा आचार्या

अत्यन्त कर्मठ, प्रतिभावान एवं बुद्धिजीवी संन्यासी का उदय आज प्रसन्नता का विषय है।

– श्री बिरजानन्द एडवोकेट

सोशल मीडिया के माध्यम से आर्य समाजों को अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुति विश्व स्तर पर पहुँचाने का मार्ग दिया है स्वामी आदित्यवेश जी ने।

– चौ. अजीत सिंह एडवोकेट पूर्व विधायक

आर्य समाज की क्रांतिकारी विचारधारा को तीव्र गति से बढ़ाने का कार्य करेंगे स्वामी आदित्यवेश जी।

– श्री रणधीर सिंह रेढू

एक जाज्वल्यमान सितारे का उदय हुआ स्वामी आदित्यवेश के रूप में।

– श्री राममोहन राय एडवोकेट

स्वामी आदित्यवेश जी योग के माध्यम से युवाओं को सर्वतोमुखी प्रगति पथ पर ले जाने का कार्य प्राथमिकता की दृष्टि से करेंगे।

– ब्र. अग्निदेव नैष्ठिक

स्वामी आदित्यवेश जी का बहुआयामी व्यक्तित्व आर्य समाज को चार चांद लगायेगा।

– कमांडो श्री रामेश्वर श्योराण

स्वामी आदित्यवेश जी की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना से समाज को होगा अभूतपूर्व लाभ।

– श्री हवा सिंह हुड्डा

समाज सुधार की तीव्र ललक दिखाई देती है स्वामी आदित्यवेश जी में।

– श्री भंवर लाल आर्य

आर्य समाज की क्रांतिकारी विचारधारा के पोषक हैं स्वामी आदित्यवेश जी।

– श्री मनोज लाकड़ा

स्वामी आदित्यवेश जी की प्रतिभा और कर्मठता उनको विश्व में ख्याति प्राप्त करायेगी।

– श्री अरविन्द मेहता

अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को समर्पित करने वाले विरले ही होते हैं, स्वामी आदित्यवेश जी उनमें से एक हैं।

– श्री सुरेश सिंह अहलावत, शिकागो

विलक्षण प्रतिभा के धनी और जुझारू व्यक्तित्व तथा मिलनसारिता स्वामी आदित्यवेश जी के प्रमुख गुण हैं।

– श्री रामपाल शास्त्री

श्वेत वस्त्रों में संन्यास का पूर्ण अनुभव है स्वामी आदित्यवेश जी को।

– श्री रामनिवास

मानव मात्र में भ्रातृभाव जगाने का कार्य करेंगे स्वामी आदित्यवेश जी।

– प्रिं. आजाद सिंह बांगड़

आम जनता में धार्मिक पाखण्ड के बढ़ते दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए विशेष योजना बनायेंगे स्वामी आदित्यवेश जी।

– श्री महेन्द्र भाई

सत्य, प्रेम, न्याय, सहनशीलता आदि की पुनर्स्थापना के लिए कटिबद्ध रहेंगे स्वामी आदित्यवेश जी।

– श्रीमती विप्रा राठी, न्यूयार्क

मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब चैनल के माध्यम से अन्धविश्वास और पाखण्ड के खिलाफ कुठाराघात करेंगे स्वामी आदित्यवेश जी।

– श्री धर्मेन्द्र आर्य

विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाकर परिपक्व हो चुके हैं स्वामी आदित्यवेश जी।

– ब्र. सहसरपाल आर्य

युवा चरित्र निर्माण शिविरों को आयोजित करने का गहरा अनुभव है स्वामी आदित्यवेश जी में और यह अनुभव युवाओं को चरित्रवान बनाने में मुख्य भूमिका निभायेगा।

– श्री विष्णुपाल

आर्य समाज में संघर्ष के प्रतीक बनकर उभरे हैं स्वामी आदित्यवेश जी।

– श्री प्रवीण आर्य

सोशल मीडिया का प्रकल्प बनाकर आर्य समाज के इतिहास में नया अध्याय जोड़ा है स्वामी आदित्यवेश जी ने।

– श्री राम कुमार सिंह आर्य

स्वामी आदित्यवेश जी का अपने सम्पूर्ण जीवन को समाज और देशहित में आहूत करने का संकल्प अपने आपमें अद्वितीय है।

– श्री अरुण आर्य

आर्य समाज को नये आयाम देने के लिए क्रांतिपथ पर अग्रसर हैं स्वामी आदित्यवेश जी।

– श्री मनोचा खण्डेलवाल

स्वामी आदित्यवेश जी को युवाओं का भरपूर समर्थन प्राप्त है।

– ब्र. रामपाल आर्य

युवा क्रांति के मसीहा बनकर उभरेंगे स्वामी आदित्यवेश जी।

– स्वामी ओमवेश

स्वामी आदित्यवेश जी को आर्य संन्यासियों का सान्निध्य एवं वरदहस्त प्राप्त होना अत्यन्त सौभाग्य की बात।

– स्वामी विजयवेश

स्वामी आर्यवेश

प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी चन्द्रवेश

स्वामी रामवेश

स्वामी नित्यानन्द

स्वामी सम्पूर्णानन्द

स्वामी ओमवेश

बहन प्रवेश

बहन पूनम

चौ. हरि सिंह सैनी

पं. माया प्रकाश त्यागी

आचार्य महावीर मीमांसक

आचार्य हरिदत्त

आचार्य राजेन्द्र

श्री बजरंग लाल गोयल

स्वामी प्रेमानन्द

श्री शमशेर आर्य

आचार्य बलवीर

श्री राममोहन राय

श्री हवा सिंह हुड्डा

श्री महेन्द्र भाई

बहन कल्याणी आर्या

श्री सुमित आर्य 'सरपंच'

डॉ. आनन्द कुमार

आर्य समाज के महान नेता त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी के 84वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित

14वाँ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ समारोह पूर्वक सम्पन्न

13 दिन तक चले महायज्ञ में हजारों लोगों ने कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता व धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध आहुति डालकर लिया संकल्प

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष में आगे आयें युवा

– स्वामी आर्यवेश

संस्कारी विद्यार्थी ही समाज के नव–निर्माण में दे सकते हैं योगदान

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन द्वारा 2 मार्च से 14 मार्च, 2021 तक आयोजित 13 दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ 14 मार्च, 2021 रविवार को सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर हजारों लोगों ने आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता एवं धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लिया। यज्ञ की पूर्णाहुति पर यजमान परिवारों को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया साथ ही जिन महानुभावों ने यज्ञ में अपना सकारात्मक योगदान दिया उन्हें भी प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नशामुक्ति सम्मेलन, गौरक्षा एवं किसान सम्मेलन, पाखण्ड–खण्डन सम्मेलन, महिला सशक्तिकरण सम्मेलन एवं आर्य सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस अवसर पर प्रातः 8 से 10.30 बजे तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति यज्ञ के ब्रह्मा त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने सम्पन्न कराई। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने यजमानों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए अपने प्रवचन में कहा कि यदि वेद को समग्रता से जान लिया जाये तो सच्चे हृदय के विवेकशील व बुद्धिजीवी लोग यह स्वीकार करेंगे कि वेद मानव आचार संहिता व धर्मशास्त्र है। धर्म मनुष्य जीवन में श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव को धारण करने को कहते हैं। मनुष्य के लिए सबसे अच्छी व आवश्यक यदि कोई वस्तु संसार में है तो वह सच्चे व अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव ही हैं। यह अच्छे गुण, कर्म व स्वभाव का धारण ही धर्म पालन कहलाता है। उन्होंने कहा कि वेद से प्राचीन पुस्तक या मत, पंथ, धर्म का अन्य कोई ग्रन्थ संसार में नहीं है। अतः वेद की शिक्षाओं को धारण करते हुए हमें अपने जीवन में निरन्तर उन्नतशील बनते जाना है।

प्रातः 11 बजे से 3 बजे तक आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता चौ. हरिसिंह सैनी पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार ने की। मुख्यअतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, सारस्वत अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, विशिष्ट अतिथि के रूप में पंचकुला के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री विशाल मलिक, प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य श्री सत्यप्रकाश, आर्य समाज हिसार के कोषाध्यक्ष श्री बजरंग लाल गोयल तथा स्वागताध्यक्ष के रूप में श्री महावीर सिंह ठेकेदार टिटौली ने पधारकर सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी, सोमधाम आश्रम खेलड़ा, गुरुग्राम से स्वामी विजयवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. बलवीर जी आचार्य, आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक श्री लाजपत राय जी चौधरी, श्री अजीत सिंह जी पूर्व विधायक झज्जर, युवा समाजसेवी श्री हवासिंह हुड्डा और गुरुकुल कालवा जीन्द से ब्र. अग्निदेव आर्य जी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने पधारकर सम्मेलन को सम्बोधित किया।

आर्य सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान तथा पूरे कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से मुझे आर्य समाज का कार्य करने की दिशा मिली और उसी का यह परिणाम है कि आज मैं संन्यासी के रूप में कार्य कर रहा हूँ। स्वामी आर्यवेश जी ने जनता का आह्वान किया कि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज के द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलनों में तन–मन–धन से सहयोग करें।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने स्वामी इन्द्रवेश जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उन्हें आर्य समाज का एक महान योद्धा बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी ऐसे तपस्वी संन्यासी थे जिन्होंने सैकड़ों नवयुवकों को आर्य समाज का कार्य करने के लिए जीवनदानी बनाया। उन्होंने कहा कि देश में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आर्य समाज ही कटिबद्ध दिखाई देता है। हम सबको आर्य समाज का तन–मन–धन से सहयोग करना चाहिए।

सारस्वत अतिथि के रूप में पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में कहा कि संस्कारी विद्यार्थी ही समाज के नव–निर्माण में योगदान दे सकता है। उन्होंने कहा कि हमें अपने बच्चों को भौतिकवाद की मशीन का पुर्जा नहीं बल्कि मानवता की भावना को संजोये रखने वाला मानव ही बनाना है। उन्होंने कहा कि देश में सामाजिक बुराईयाँ तथा धार्मिक पाखण्ड का

अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ 3 का शेष

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध केवल आर्य समाज ही कर रहा है संघर्ष

– पं. माया प्रकाश त्यागी

शिक्षा के साथ संस्कारों पर भी दिया जाये जोर

– हरि सिंह सैनी

बोलबाला बढ़ता जा रहा है। इन कुरीतियों को समाप्त करने के लिए आर्य समाज में नवयुवकों को आगे लाना होगा। क्योंकि युवा ही किसी समाज की रीढ़ होते हैं। अगर युवाओं को संस्कारित कर दिया गया तो इन बुराईयों से लोहा लेने में हम सक्षम हो सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि तथा प्रसिद्ध समाजसेवी श्री विशाल मलिक ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि हम सब लोग महर्षि दयानन्द जी के बताये सिद्धान्तों और मन्तव्यों का पालन करने लगें तो समाज को एक सुन्दर समाज के रूप में परिवर्तित करने में हम सक्षम हो सकते हैं। क्योंकि समाज सुधार की शुरुआत हमें अपने से ही करनी होगी। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् प्रतिवर्ष इस प्रकार के आयोजन करके समाज को एक सही रास्ता दिखाने का कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर वैद्य सत्य प्रकाश आर्य ने कहा कि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और यज्ञ के द्वारा हम जहां पर्यावरण को संतुलित कर पाते हैं वहीं अपने जीवन को भी उन्नत करने में सफल हो पाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को महर्षि दयानन्द जी द्वारा बताये गये पंचमहायज्ञों को प्रतिदिन अवश्य ही करना चाहिए।

इस अवसर पर टिटौली के ठेकेदार श्री महावीर सिंह जी ने कहा कि आर्य समाज में सबसे ज्यादा आवश्यकता युवाओं के निर्माण की है लेकिन कोई भी राजनैतिक या सामाजिक दल इस तरफ गम्भीर नहीं दिखाई पड़ रहा, केवल मात्र आर्य समाज ही एकमात्र संगठन है जिसने युवाओं के निर्माण की जिम्मेदारी ली हुई है। हम सभी को आर्य समाज के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना विशेष योगदान देते रहना चाहिए।

इस अवसर पर पलवल से पधारे युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि वैदिक संस्कृति सृष्टि नियमानुकूल त्यागभाव पर आधारित है। इसका मूल इसी भाव में निहित है जिससे संसार में सुख, शांति स्थापित हो सकती है। उन्होंने कहा कि वैदिक वर्ण व्यवस्था हमारे सामाजिक जीवन के प्रति, हमारे उत्तरदायित्वों का निर्देशन करती है। समाज के जो शत्रु हैं जैसे अज्ञान, अन्याय, अभाव तथा आलस्य इन्हें अपने–अपने सामर्थ्यानुसार उस–उस वर्ण के कार्य विभाग के द्वारा दूर किया जा सकता है। क्योंकि कार्य विभाजित होने से उस कार्य का उत्तम रूपेण सम्पादन होगा। नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज नशा बड़ी तेजी से समाज में फैल रहा है जिसके कारण समाज का ताना–बाना टूट रहा है। इसलिए देश के प्रशासकों को नशे पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए।

इस अवसर पर श्री बजरंग लाल गोयल, स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी विजयवेश जी, श्री बिरजानन्द जी, श्री बलवीर जी आचार्य, श्री हवा सिंह हुड्डा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

इससे पूर्व चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ 2 मार्च, 2021 से निरन्तर 13 मार्च तक चलता रहा। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः तथा सायं यज्ञ और विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे। विभिन्न अवसरों पर समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद, जनप्रतिनिधियों ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। विभिन्न अवसरों पर नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान एवं मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब चैनल के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री सुनील देशवाल इंजीनियर, हरियाणा किसान युनियन के अध्यक्ष श्री रणधीर सिंह रेढ़ू, प्रि. आजाद सिंह सोनीपत, श्री इन्द्र सिंह आर्य, पूर्व एस.डी.एम., भिवानी, प्रो. भूप सिंह आर्य, भिवानी, श्री दयानन्द शास्त्री, टिटौली, बहन कल्याणी आर्या, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका, स्वामी यज्ञमुनि जी महाराज, श्री शमशेर आर्य, प्रधान, गौसेवा संघ, हरियाणा, श्री अनिल कुमार हुड्डा (समाजसेवी), घुसकानी, श्री रामचन्द्र ठेकेदार, टिटौली, श्री सोनू आर्य, सह–निदेशक मिशन आर्यावर्त न्यूज चैनल, श्री जय प्रकाश आर्य सोहटी, वानप्रस्थ शमशेर नम्बरदार लाडवा, हिसार, आचार्य हरिदत्त जी, गुरुकुल लाढ़ौत, स्वामी ब्रह्मानन्द जी हाथरस, उ. प्र., स्वामी सोम्यानन्द जी, मथुरा, उ. प्र., श्री गंगाशरण आर्य, दिल्ली, ब्र. सहसरपाल आर्य, व्यायामाचार्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने पधारकर समारोह की शोभा बढ़ाई तथा अपने प्रवचनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। पूरे समारोह में प्रसिद्ध भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या के सुमधुर भजनों का आनन्द श्रोताओं ने उठाया।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर आयोजित महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि जो छोटी बच्ची अभी गर्भ में है और भविष्य में जो खुद माँ बनकर प्रकृति की प्रक्रिया का हिस्सा बनेगी उसे गर्भ में ही काट–छांटकर गन्दे नाले में फेंक दिया जाता है। उन्होंने कहा कि माँ शब्द गऊ के साथ भी जोड़ा जाता है और आज वो भी बूचड़खानों में कट रही हैं। हमारे देश को भी माँ कहा जाता है, लेकिन यह माँ भी समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, नशाखोरी, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, बलात्कार, शोषण, भुखमरी जैसी बुराईयों से त्रस्त है। इसलिए आज समाज में माँ के अस्तित्व को बचाने के लिए समाज के हर वर्ग को ताकत लगानी चाहिए। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि जब तक लोग अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे, समाज भी नहीं बदल सकता, क्योंकि समाज तो नाम ही लोगों के समूह का है। इसलिए अच्छे समाज की नींव अच्छी मानसिकता पर ही टिकी हुई है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही सामाजिक मुद्दों पर कार्य करता आ रहा है और आज भी आर्य समाज देश के सजग प्रहरी की तरह खड़ा है और समाज के हर वर्ग को साथ लेकर सामाजिक कुरीतियों और बुराईयों को समाज से मिटाने के लिए अथक प्रयास कर रहा है। श्री अनिल हुड्डा घुसकानी ने कहा कि वही समाज उन्नति को प्राप्त होता है जहां महिलाओं को सम्मान प्राप्त होता है। जब तक हम महिला को सम्मान व स्वाभिमान से जीने का अधिकार नहीं देंगे तो समाज भी पूरी गति से तरक्की नहीं कर सकता। वैदिक विरक्त मण्डल के संगठन मंत्री स्वामी सोम्यानन्द जी ने कहा कि हमें समाज को सुन्दर बनाने के लिए मानवीय गुणों को जीवन में धारण करना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने 6 मार्च को पं. लेखराम बलिदान दिवस के अवसर पर कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्यों में पं. लेखराम जी का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। उनका नाम आर्य समाज के मूर्धन्य कर्मवीरों और अमर हुतात्मा के नाम से स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उन्होंने यह जानते हुए भी कि यदि विधर्मियों का खण्डन किया जायेगा तो मौत निश्चित है, लेकिन वे अपने कर्म पथ पर कभी रुके नहीं। उनमें चिन्तन, भाषण और लेखन की असीम क्षमता थी। इतिहास, ईसाइयत और इस्लाम का उन्होंने गहन अध्ययन किया था। पं. लेखराम जी में अद्भुत निर्भीकता थी। 6 मार्च 1897 में जब वह महर्षि दयानन्द जी का जीवन परिचय लिख रहे थे तभी उनके घर में ही एक विधर्मी ने आकर उनके ऊपर छूरे से कई वार किये और उनको गम्भीर रूप से घायल कर दिया। उनके रक्त की बूंदें महर्षि के जीवन की पाण्डुलिपि पर भी पड़ी। इसीलिए उन्हें रक्तसाक्षी भी कहा जाता है। घाव गहरे थे और उनका बलिदान हो गया पं. लेखराम ने आर्य समाज को तहरीर व तकरीर के कार्य को निरन्तर चलाये रखने का आह्वान किया था। निरन्तर प्रातः एवं सायं चले इस चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में 13 दिनों तक प्रवाहित होने वाली ज्ञान गंगा में हजारों लोगों ने डुबकी लगाई और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का संकल्प व्यक्त किया।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में सपत्नीक यजमान बनने वाले महानुभाव

श्री अरविन्द मेहता एवं श्रीमती मधुर भाषिणी, दीनानगर, डॉ. रणवीर सिंह खासा एवं श्रीमती सुनीता रोहतक, श्री महावीर सिंह ठेकेदार एवं श्रीमती कविता टिटौली, श्री जय सिंह ठेकेदार एवं श्रीमती गुलाब कौर, गोहाना, श्री आर. के. गुप्ता एवं श्रीमती कमलेश गुप्ता, दिल्ली, श्री बाबूलाल जिन्दल एवं श्रीमती गुणवती जिन्दल, दिल्ली, श्री जय कृष्ण जिन्दल एवं श्रीमती शारदा जिन्दल, दिल्ली, श्री लक्ष्मीनारायण जिन्दल एवं श्रीमती दमयन्ती जिन्दल दिल्ली, श्री विष्णुपाल एवं श्रीमती नन्दिता देवी, दिल्ली, श्री अमित बल्हारा एवं श्रीमती रश्मि देवी, रोहतक, श्री वीरपाल देशवाल एवं श्रीमती उर्मिला, लाढ़ौत, श्री जगफूल सिंह ढिल्लो एवं श्रीमती शीला देवी, जीन्द, श्री चन्द्र प्रकाश मलिक एवं श्रीमती कौशल्या देवी, भिवानी, श्री ओम प्रकाश एवं श्रीमती सुदेश कुमारी, भिवानी, श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री एवं श्रीमती कृष्णा, रोहतक, श्री दिलबाग सिंह अहलावत एवं श्रीमती उर्मिला,

शेष पृष्ठ 10 पर

14वाँ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ चित्रों के झरोखे से

स्वामी आदित्यवेश जी के संन्यास दीक्षा समारोह की चित्रमय झलकियाँ

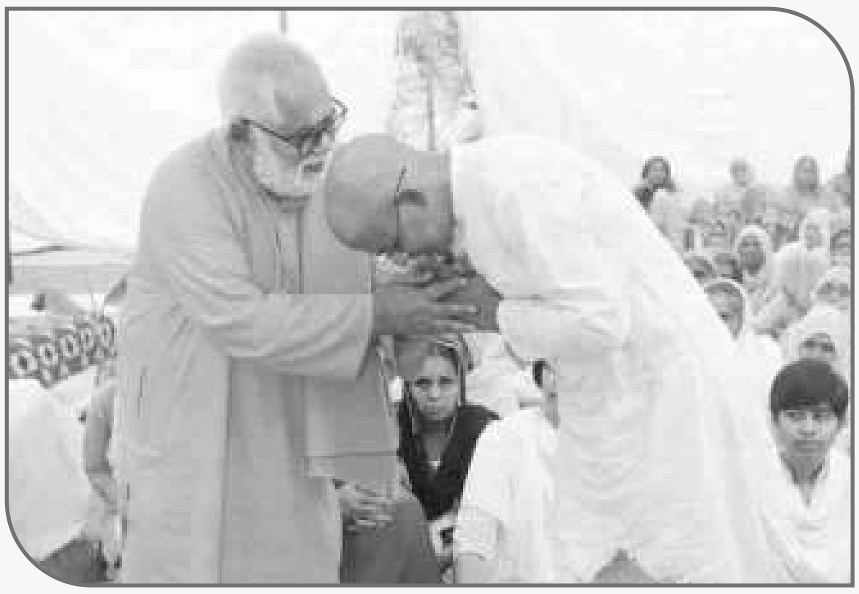

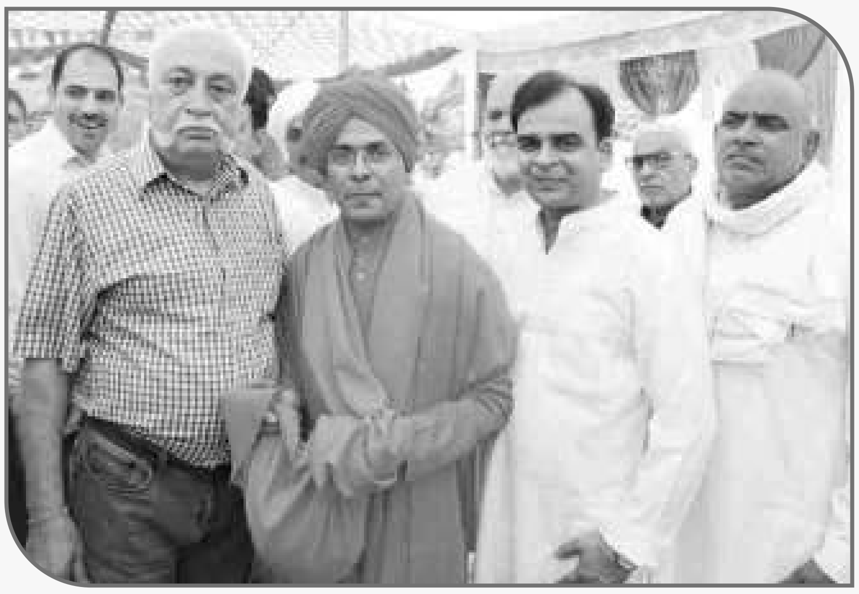

स्वामी आदित्यवेश जी के संन्यास दीक्षा समारोह की चित्रमय झलकियाँ

स्वामी आदित्यवेश जी के संन्यास दीक्षा समारोह की चित्रमय झलकियाँ

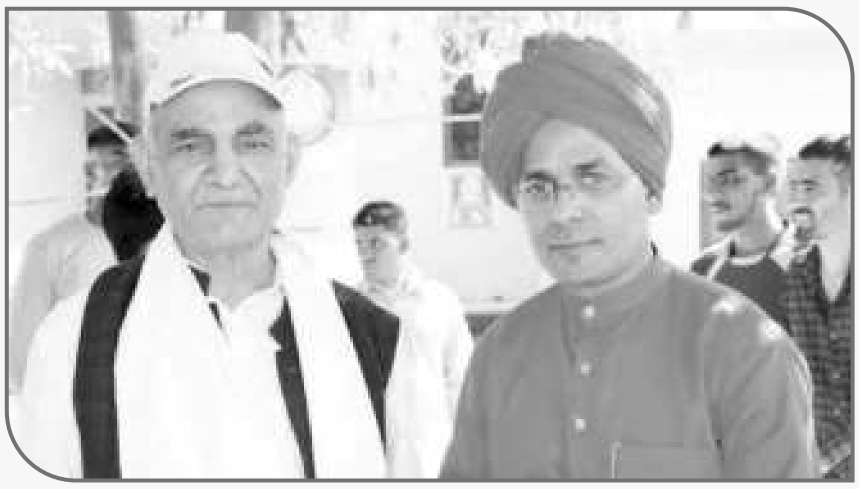

स्वामी आदित्यवेश जी के संन्यास दीक्षा समारोह की चित्रमय झलकियाँ

पृष्ठ 1 का शेष

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने लिया संन्यास अब बने स्वामी आदित्यवेश

स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती तक आर्य समाज तैयार करेगा 200 नये आर्य संन्यासी

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से सैंकड़ो युवाओं ने अपना जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित किया है। उन्होंने युवक क्रांति अभियान चला कर आर्य समाज को नवजीवन प्रदान किया था। आर्य समाज स्वामी दयानंद जी की 200वीं जयंती तक 200 आर्य संन्यासी तैयार करेगा। आज ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने भी इसी कड़ी में अपने आपको समर्पित किया है। यह इस श्रंखला का शुभारंभ है। उन्होंने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी के आर्य राष्ट्र निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए रात दिन प्रयास किये जायेंगे। उन्होंने स्वामी आदित्यवेश को सूर्य की उपमा देते हुए कहा कि संन्यासी को स्वार्थ का त्याग कर परमार्थ का रास्ता चुनना चाहिए। संसार को बिना भेदभाव के ज्ञानरूपी प्रकाश के द्वारा तामसिक वृतियों से दूर करना चाहिए।

गाजियाबाद, पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल एवं अध्यक्ष श्रीमद्‌दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्, स्वामी रामवेश जी महाराज अध्यक्ष नशाबन्दी परिषद् हरियाणा, स्वामी ओमवेश जी महाराज पूर्व गन्ना मंत्री उत्तर प्रदेश, स्वामी नित्यानन्द जी महाराज उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, युवा संन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज गुरुकुल नलवी, करनाल, स्वामी विजयवेश जी खेड़ला गुरुग्राम, आचार्य राजेन्द्र जी महाराज गुरुकुल कालवा, जीन्द, आचार्य हरिदत्त जी उपाध्याय गुरुकुल लाढ़ौत रोहतक, स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, आचार्य संन्यास आश्रम गाजियाबाद, स्वामी यज्ञमुनि गुरुकुल चित्तौड़ाझाल, मुजफ्फरनगर, उ. प्र., स्वामी सोम्यानन्द जी संगठन मंत्री वैदिक विरक्त मण्डल, स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, प्रो. विट्ठलराव आर्य मंत्री सार्वदेशिक सभा, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, वैद्य सत्य प्रकाश आर्य नाड़ी वैद्य कायाकल्प रोहतक, प्रसिद्ध युवा समाजसेवी श्री विशाल मलिक चण्डीगढ़, चौ. हरिसिंह सैनी पूर्वमंत्री हरियाणा सरकार प्रधान आर्य समाज हिसार, डॉ. महावीर मीमांसक दिल्ली, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या, माता मूर्तिदेवी आर्या व माता वीरमति आर्या, श्रीमती सुनीता खासा, श्रीमती श्वेता देशवाल, श्रीमती सुषमा, बहन रींकू आर्या, बहन रीमा आर्या, बहन अदिति खासा, बहन शशि आर्या एवं इन्दू आर्या, बहन एकता आर्या एवं पूजा आर्या, बहन मोनिका आर्या एवं अंजलि आर्या, डॉ. आंनद कुमार पूर्व आई.पी.एस. अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, डॉ. बलवीर आचार्य पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, डॉ. कृष्णा आचार्या सेवानिवृत्त प्रोफेसर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट, चौ. अजीत सिंह एडवोकेट पूर्व विधायक झज्जर, चौ. रणधीर सिंह रेढ़ू एडवोकेट अध्यक्ष हरियाणा किसान यूनियन, सेठ बजरंग लाल आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज हिसार, श्री राममोहन राय एडवोकेट मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, ब्र. अग्निदेव नैष्ठिक गुरुकुल कालवा जीन्द, कमांडो श्री रामेश्वर श्योराण, युवा नेता श्री हवा सिंह हुड्डा, श्री भंवर लाल आर्य अधिष्ठाता आर्य वीरदल राजस्थान, राष्ट्रपति अवार्ड से पुरस्कृत देश के सर्वश्रेष्ठ अध्यापक श्री मनोज लाकड़ा, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री अरविन्द मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुर भाषिणी मेहता दीनानगर, पंजाब, श्री सुरेशपाल सिंह अहलावत शिकागो अमेरिका, श्रीमती विप्रा राठी व उनके सुपुत्र चि. जैशल राठी व सुपुत्री कु. परीराठी न्यूयार्क अमेरिका, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व अध्यक्ष श्री रामनिवास, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री प्रिं. आजाद सिंह बांगड़, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री महेन्द्र भाई, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उ. प्र. के अध्यक्ष श्री प्रवीण आर्य, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के अध्यक्ष श्री राम कुमार सिंह आर्य तथा मंत्री श्री अरुण आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् उ. प्र. के अध्यक्ष ब्र. रामफल आर्य तथा मंत्री श्री मनोचा खण्डेलवाल, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायामाचार्य ब्रं सहसरपाल आर्य, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कोषाध्यक्ष श्री विष्णु पाल आदि ने स्वामी आदित्यवेश जी को अपनी शुभकामनाएँ अर्पित की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से सैंकड़ो युवाओं ने अपना जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित किया है। उन्होंने युवक क्रांति अभियान चला कर आर्य समाज को नवजीवन प्रदान किया था। आर्य समाज स्वामी दयानंद जी की 200वीं जयंती तक 200 आर्य संन्यासी तैयार करेगा। आज ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने भी इसी कड़ी में अपने आपको समर्पित किया है। यह इस श्रृंखला का शुभारंभ एवं पहली आहुति है। उन्होंने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी के आर्य राष्ट्र निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए रात दिन प्रयास किये जायेंगे। उन्होंने स्वामी आदित्यवेश जी को सूर्य की उपमा देते हुए कहा कि संन्यासी को स्वार्थ का त्याग कर परमार्थ का रास्ता चुनना चाहिए। संसार को बिना भेदभाव के ज्ञानरूपी प्रकाश के द्वारा तामसिक वृतियों से दूर करना चाहिए।

नाड़ी वैद्य कायाकल्प के संचालक सत्यप्रकाश आर्य ने इस अवसर पर आर्य समाज को वेद प्रचार रथ भेंट किया। अपने प्रवचन में उन्होंने कहा कि आर्य समाज देश को पुनः विश्व गुरु बनाने की कला जानता है। महर्षि दयानंद ने वेदों की पुनर्स्थापना के लिए आजीवन प्रयास किया। इन्ही कार्यों को गति देने के लिए इस तरह का सहयोग आगे भी जारी रहेगा।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने संन्यास दीक्षा ग्रहण करने के उपरान्त सभी वरिष्ठ संन्यासियों का धन्यवाद अर्पित करते हुए कहा कि अपने गुरुओं की भावनाओं का आदर करते हुए स्वामी दयानंद की मान्यताओं, वेद के सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। स्वामी इंद्रवेश जी द्वारा प्रारम्भ किये गये युवक क्रांति अभियान को और तेज करेंगे तथा गाँव–गाँव जाकर युवाओं को नशे से दूर रहने व उनको चरित्र व देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत करने के कार्य तेज करेंगे।

पृष्ठ 4 का शेष

14वाँ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ समारोह पूर्वक सम्पन्न

रोहतक, श्री धर्मेन्द्र आर्य एवं श्रीमती रीतू, छपरौली, उत्तर प्रदेश, श्री नरेन्द्र पहलवान एवं श्रीमती मोनिका देवी, छपरौली, उत्तर प्रदेश, श्री अवनीश आर्य एवं श्रीमती ऊषा देवी, रठौड़ा, उत्तर प्रदेश, श्री जगदीश चन्द्र एवं श्रीमती शशि बाला, रधाना, जीन्द, मा. अजीत पाल एवं श्रीमती कृष्णा, खटकड़, जीन्द, श्री सज्जन सिंह राठी एवं श्रीमती रेणु, जीन्द, श्री अशोक आर्य एवं श्रीमती रेखा, खटकड़, जीन्द, श्री वीरेन्द्र पहलवान एवं श्रीमती सुमन देवी, खटकड़, जीन्द, श्री जितेन्द्र सिंह एवं श्रीमती सविता, गुमाना, मा. प्रदीप कुमार एवं श्रीमती प्रभावती, रोहतक, श्री विनीत सिंह एवं श्रीमती कविता, रोहतक, डॉ. परविन्द्र कुमार एवं श्रीमती सुमन, रोहतक, श्री शान्तनु आर्य एवं श्रीमती दीपिका, सोहटी, डॉ. एन.पी. गौड़ एवं श्रीमती मंजुला, बहल, श्री हरिकेश राविश एडवोकेट एवं श्रीमती चन्द्रसुखी, कैथल, श्री सत्यवीर आर्य एवं श्रीमती जगमती, कैथल, श्री अशोक वशिष्ठ एवं श्रीमती अमिता, दिल्ली, श्री श्यामलाल आर्य एवं श्रीमती मंजू बाला, कैथल, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री एवं श्रीमती मनीषा भारती, रोहतक, डॉ. श्यामदेव एवं श्रीमती नन्दिता, रोहतक, आचार्य सत्यव्रत एवं श्रीमती सुमन, रोहतक, डॉ. यशदेव शास्त्री एवं श्रीमती सरिता, रोहतक, श्री विनोद हुड्डा एवं श्रीमती सोनिया, रोहतक, श्री ओम पहलवान एवं श्रीमती प्रीति देवी, अजायब, रोहतक, श्री वेद प्रकाश आर्य एवं श्रीमती विद्यावती, रोहतक, श्री बबरूभान अहलावत एवं श्रीमती सुषमा, रोहतक, डॉ. स्वतन्त्रानन्द शास्त्री एवं श्रीमती राजबाला, रोहतक, श्री महावीर शास्त्री एवं श्रीमती सुनीता, रोहतक, श्री मनोज पहलवान एवं श्रीमती रीतू, फरमाना, श्री राजेश आर्य एवं श्रीमती रजनी आर्या, फरमाना, श्री यज्ञवीर सिंह एवं श्रीमती प्रवेश, सुन्डाना, श्री विश्वबन्धु शास्त्री एवं श्रीमती विमला, आहूलाना, श्री राम कुमार आर्य एवं श्रीमती संतोष, आहूलाना, श्री पवन आर्य एवं श्रीमती कृष्णा, आहुलाना, श्री रामवीर आर्य एवं श्रीमती शिल्पा, सिवाना, श्री कृष्णदेव शास्त्री एवं श्रीमती पूजा, बोहर, श्री कर्मवीर आर्य एवं श्रीमती सुमित्रा, खरकड़ा, श्री बलवन्त सिंह आर्य एवं श्रीमती सुलोचना, लाढ़ौत, श्री रामावतार आर्य एवं श्रीमती नीलम देवी, लोहारू, श्री महेन्द्र सिह आर्य एवं श्रीमती भारती, आर्यनगर, हिसार, श्री सत्यपाल आर्य एवं श्रीमती सुषमा देवी, जूई, भिवानी, श्री ईश्वर दत्त एवं श्रीमती सुनीता शास्त्री, कैथल, श्री अजय पाल एवं श्रीमती प्रीति, टिटौली, श्री सुभाष कुण्डू एवं श्रीमती अनीता, टिटौली, श्री कृष्ण प्रजापत एवं श्रीमती बाला, टिटौली, श्री नरेश पंडित एवं श्रीमती पिंकी, टिटौली, श्री सत्यप्रिय एवं श्रीमती रश्मि, टिटौली, श्री नरदेव आर्य एवं श्रीमती निर्मला, टिटौली, मा. रमेश एवं श्रीमती नीलम, टिटौली, श्री अमित आर्य एवं श्रीमती श्वाति, टिटौली, श्री तकदीर आर्य एवं श्रीमती नीलम देवी, टिटौली, श्री कृष्ण कुमार एवं श्रीमती सोनिका, टिटौली, श्री पाणिनी एवं श्रीमती शकुन्तला, टिटौली, श्री महा सिंह एवं श्रीमती सावित्री, टिटौली, डॉ. नारायण सिंह एवं श्रीमती अनीता, टिटौली, श्री वीरेन्द्र कुण्डू एवं श्रीमती कृष्णा, टिटौली, श्री अजय कुण्डू एवं श्रीमती रीतू, टिटौली, श्री धर्मदेव वशिष्ठ एवं श्रीमती रीना, टिटौली, श्री अनिल एवं श्रीमती शीला, टिटौली, श्री कश्मीर एवं श्रीमती सुशीला, टिटौली, श्री सत्यवीर सिंह एवं श्रीमती कृष्णा, टिटौली, श्री महेन्द्र सिंह एवं श्रीमती रामकौर, टिटौली, श्री राजेन्द्र सिंह एवं श्रीमती ओमवती, टिटौली, श्री राजवीर मलिक एवं श्रीमती प्रमिला, मोखरा, श्री संजय एवं श्रीमती निर्मल, मोखरा, श्री देवी सिंह आर्य एवं श्रीमती पूनम, रोहतक, श्री राज कुमार हुड्डा एवं श्रीमती सुमन हुड्डा, रोहतक, श्री जगवीर मलिक एवं श्रीमती किरण, रोहतक, श्री रणवीर राठी एवं श्रीमती उर्मिल राठी, रोहतक, श्री विनोद हुड्डा एवं श्रीमती अनीता, रोहतक, श्री जिले सिंह सैनी एवं श्रीमती बिमला, टिटौली, श्री सुभाष एवं श्रीमती निशा, जीन्दराण, श्री रामराज कादियान एवं श्रीमती सुमन, रोहतक, श्री धर्मपाल एवं श्रीमती सुनीता, रोहतक, श्री इन्द्रजीत राणा एवं श्रीमती नीरज, रोहतक, कर्नल श्री आर.के. सिंह एवं श्रीमती कृष्णा, रोहतक, श्री अर्जुन सिंह एवं श्रीमती शकुन्तला, रोहतक, श्री कंवर सिंह मलिक एवं श्रीमती सन्तोष, रोहतक, श्री सुखवीर शास्त्री एवं श्रीमती रेणू, रोहतक, श्री अजय एवं श्रीमती विनीता, रोहतक, श्री अशोक बल्हारा एवं श्रीमती राजबाला, रोहतक, श्री कुलदीप कादियान एवं श्रीमती कमला, रोहतक, श्री ईश्वर सिंह एवं श्रीमती सुमित्रा, टिटौली, श्री देवेन्द्र एवं श्रीमती पूजा, टिटौली, श्री बलराम आर्य एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी, गंगाना सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने सपत्नीक यजमान पद को सुशोभित किया।

'वैदिक सार्वदेशिक' पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड, (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-02
प्रकाशन की अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार
मुद्रक का नाम	: प्रो. विट्‌ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
सम्पादक का नाम	: प्रो. विट्‌ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002

मैं प्रो. विट्‌ठलराव आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण, जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

प्रो. विट्‌ठलराव आर्य, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य से बने स्वामी आदित्यवेश जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों और सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुँचाकर वर्षों से जागरूकता की अलख जगाने वाले ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आर्य समाज के वो क्रांतिकारी नवयुवक हैं जो निरन्तर आर्य समाज को नये आयाम देने के लिए कटिबद्ध हैं। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान हजारों युवाओं के मार्गदर्शक, मिशन आर्यावर्त के निदेशक समेत वे कई संगठनों के वरिष्ठ पदाधिकारी रहकर अपनी जिम्मेदारियों का पूरी निष्ठा, ईमानदारी तथा परिश्रम से वहन कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य की मिशन आर्यावर्त की पहल अपने आपमें एक बहुत बड़ी मिसाल है जिसके बारे में पहले कभी किसी ने सोचा भी नहीं था। इसके पीछे आर्य एकता का उनका भाव परिलक्षित होता है। जब कोई समाज और देशसेवा को अपना लक्ष्य बना लेता है तो वह मानव नहीं बल्कि महामानव की श्रेणी में आ जाता है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को समाज और देशहित में आहूत करने का संकल्प लेकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी से सीधे आर्य संन्यासी बनने का निर्णय लिया।

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जब किशोरावस्था में थे तब उनका बौद्धिक स्तर अपने आप में अनोखा था। जिन व्यक्तियों के हृदय में देश, धर्म, जाति के लिए कुछ कर गुजरने की ललक होती है उनका रास्ता ही अलग होता है। श्री जगवीर सिंह एडवोकेट (स्वामी आर्यवेश जी) से प्रेरित होकर वे आर्य समाज में दीक्षित हुए और इतना समर्पित हो गये कि इन्होंने अपना पूरा जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया। एक डॉक्टर के घर पैदा हुए ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने पहले अपनी नॉन–मेडिकल की पढ़ाई छोड़कर आर्य समाज की गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ किया और जब आर्य समाज का रंग आप पर पूरी तरह चढ़ गया तो अपना अधिकतम समय उन्होंने आर्य समाज के कार्यों में ही लगाना प्रारम्भ कर दिया। अपनी एम.ए. की पढ़ाई पूरी करने के बाद 26 जून, 2006 को नैनीताल में ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेने के पश्चात् अजमेर सिंह का नाम ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य रखा गया।

सदैव मुस्कराता चेहरा, कर्मठता की मिसाल, दूरदर्शी विचारधारा तथा देश एवं समाज के लिए कुछ कर–गुजरने की ललक को हृदय में संजोये ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने सामाजिक जीवन की शुरुआत 1996 में शहीद भगत सिंह युवा परिषद् खटकड़ का गठन करके की। वे संस्था के अध्यक्ष बने और गाँव में एक आदर्श माहौल सबके साथ मिलकर बनाया जिसके फलस्वरूप सभी ग्रामवासी उनके क्रिया–कलापों को देखते हुए पहले से ही उनको एक संन्यासी के रूप में मानते थे। उन्होंने अपने गाँव में जहाँ युवा परिषद् के बहुत सुन्दर भवन का निर्माण करवाया वहीं शहीद भगत सिंह व्यायामशाला की स्थापना भी की जिसके माध्यम से अब तक लगभग 50 नवयुवक आर्मी व पुलिस में भर्ती हो चुके हैं। लगभग 350 युवा निर्माण शिविरों में आपने स्वयं प्रशिक्षण दिया है। आप द्वारा लिखी पुस्तक 'योग' भारत के अलावा विदेशों में भी काफी पसन्द की गई। कुम्भ मेला 2010 में आयोजित पाखण्ड खण्डन कार्यक्रम व 40 दिवसीय शिविर का संयोजन भी आपने सफलता पूर्वक किया। इसके अतिरिक्त 8 राज्यों की वेद प्रचार यात्रा का संयोजन तथा 5 प्रान्तीय जन–चेतना यात्राओं का भी मुख्य जिम्मेदारी भी आपने संभाली। अब तक 11 चतुर्वेद पारायण यज्ञों का सफल संयोजन भी अपने कर रखा है। इसके अतिरिक्त आर्य समाज में एक हजार नवयुवकों के शिविर लगाने की नई परम्परा आपने शुरु की और उन लोगों को करारा जवाब दिया जो कहते थे कि आर्य समाज में नवयुवक नहीं आते हैं। अपनी कर्मठता और दूरदर्शी सोच से ओत–प्रोत कार्यक्रमों को करने के कारण आज हजारों नौजवान आपको अपना आदर्श मानते हैं। आपकी विशेष कार्यशैल, समर्पण व पहली मुलाकात में ही अपना बना लेने का विशेष गुण सहज में ही सबको प्रभावित करता है। ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने देश के कोने–कोने में जाकर आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों का प्रचार किया। इसके साथ ही अनेकों आन्दोलनों को सफल बनाने में आपने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभाई है। आप विदेशों में भी दक्षिण अफ्रीका, जर्मनी, हालैण्ड, फ्रान्स, स्विटजरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम आदि देशों में भी वेद प्रचार के लिए आमंत्रित किये जा चुके हैं।

ज्ञातव्य हो कि ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने 13 मार्च, 2021 को अपने गुरु तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से संन्यास की दीक्षा ली थी। दीक्षा गुरु स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें नया नाम स्वामी आदित्यवेश प्रदान किया। विश्व में उन्हें अब स्वामी आदित्यवेश के नाम से जाना जायेगा।

आर्य समाज के कार्यों को यथोचित ढंग से करने के लिए प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य कायाकल्प के संचालक श्री सत्य प्रकाश आर्य ने इस अवसर पर एक प्रचार रथ भी उन्हें भेंट किया।

आश्रम व्यवस्था–योजनाबद्ध जीवन

मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सके इसके लिए उसे योजना बद्ध अपने जीवन को जीना होता है और योजना का प्रारूप हमारे ऋषियों ने दे दिया था, जिसका अनुमोदन न केवल ऋषि दयानन्द ने किया है, अपितु अपने ग्रन्थों में वह योजना–बद्ध प्रारूप भी दिया है। और वह योजना–बद्ध प्रारुप है आश्रम व्यवस्था। यह एक ऐसी योजना है जो मनुष्य को अपने जीवन को न केवल व्यवस्थित करके उच्चतम योग्यता की ओर बढ़ने का अवसर प्रदान करती है अपितु सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए मनुष्य अपने परम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष तक की भी प्राप्ति कर सकता है।

हमारे ऋषियों द्वारा यह एक ऐसा तन्त्र विकसित किया गया है जो संसार भर में आज तक कोई भी दार्शनिक नहीं दे पाया। संसार भर में आज जिन दार्शनिकों को महान माना जाता है, चाहे वे यूनानी रहे हों, रोमवासी रहे हों या आज के आधुनिक युग के विचारक रहे हों, वे न तो जीवन की कोई इस प्रकार की योजना दे पाते हैं और न ही इसका कोई विकल्प दे पाने में सक्षम हैं। वास्तव में आश्रम व्यवस्था मनुष्य को सम्पूर्णता से जीने का एक मौका देती है, जिसमें व्यक्ति अपने प्रत्येक कर्त्तव्य को पूरा कर पाने में तो सफल होता ही है अपितु उसे अपने जीवन में कभी पश्चाताप का अनुभव भी नहीं होने पाता है क्योंकि प्रत्येक आश्रम में उसकी योग्यता बढ़ती चली जाती है। व्यक्ति अपने जीवन में सम्पूर्णता का अनुभव करता है वह इस व्यवस्था के अनुसार जीवन जीने पर न केवल व्यक्तिगत कर्त्तव्यों को पूरा कर पाता है अपितु पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्त्तव्यों को भी पूरा कर पाने में सक्षम हो जाता है।

वैदिक व्यवस्थाओं के अर्न्तगत हमारे ऋषियों ने व्यक्ति के जीवन को चार भागों में बाटा है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। व्यक्ति के जीवन का प्रथम चरण ब्रह्मचर्य आश्रम है। जिसमें उसका मुख्य कार्य विद्या को प्राप्त करना है क्योंकि बिना विद्या के योग्यता प्राप्त नहीं होती और योग्यता के बिना कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया जा सकता । अतः जीवन का प्रारम्भिक काल अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्या प्राप्त करना ही लक्ष्य निर्धारित किया गया है क्योंकि विद्या जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है इसलिए उसे जीवन के प्रारम्भ में ही प्राप्त करना लिखा है और वह भी गुरुकुलीय शिक्षा, जिससे अगले आश्रम अर्थात गृहस्थ में प्रवेश करने की योग्यता अर्जित कर सके और गृहस्थ जीवन में सफल हो सके। आज भी विद्यार्थी काल में ही अच्छी योग्यता प्राप्त करके, समर्थ बनकर जब गृहस्थ बनता है, तभी गृहस्थ जीवन में सफल होता है। अतः विद्यार्थी काल में विद्या प्राप्ति की आज भी उतनी ही प्रासंगिकता है जितना ऋषियों के द्वारा उसे निर्धारित किया गया था।

एक आश्रम का जीवन अगले आश्रम का आधार बनता है, अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम की योग्यता गृहस्थ जीवन का आधार बनती है। इसीलिए ऋषि दयानन्द वेद मन्त्र के माध्यम से समझाते है कि जो ब्रह्मचर्य धारण, विद्या, उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये बिना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते हैं, वे स्त्री पुरुष नष्ट भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते। गृहाश्रम के कर्त्तव्यों को दर्शाते हुए ऋषि लिखते हैं– जो ऐहिक और पारलौलिक सुख प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना है, और नियत काल में यथा विधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना और सत्य धर्म में ही अपना तन– मन–धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पति करना।

अतः गृहस्थ में मनुष्य द्वारा उस विद्या का उपयोग जो उसने ब्रह्मचर्य काल में ग्रहण की थी, इस प्रकार करना होता है कि परोपकार हो, पारलौकिक सुख अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वरोपासना हो, सत्य के प्रचार–प्रसार के लिए अपना सामर्थ्य लगाना व योग्य सन्तति का निर्माण हो। गृहस्थ आश्रम ही अन्य आश्रमों के व्यक्ति को स्थिर होने का अवसर प्रदान करता है, गृहस्थ के सहारे ही अन्य आश्रम टिके हुए हैं। गृहस्थ के संसाधनों से ही ब्रह्मचारियों का पोषण होता है और संन्यासियों को परोपकार का अवसर मिलता है लेकिन गृहस्थ का यह कर्त्तव्य है क्योंकि वह भी ब्रह्मचारी रहकर अन्य गृहस्थ से उपकार प्राप्त कर चुका होता है, इसीलिए उनकी सेवा के द्वारा वह कर्त्तव्य का पालन करता है और अन्य आश्रमियों को सहारा न देकर कृतघ्नता करता है।

यह आश्रम व्यवस्था इस प्रकार बनाई गई है और इसमें इस प्रकार कार्यों का निर्धारण किया है कि एक आश्रम उससे अगले आश्रम का आधार बनता है, जिस प्रकार ब्रह्मचर्य आश्रम में अच्छी विद्या प्राप्त करके ही सुखी गृहस्थ जीवन प्राप्त किया जा सकता है, इसी प्रकार गृहस्थ काल में परिश्रम करके अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए सभी संसाधनों से सम्पन्न होता है, जब वानप्रस्थ की आयु आती है तो अपने वानप्रस्थ के कर्त्तव्यों का निर्वाह कर सकता है अर्थात् गृहस्थ वानप्रस्थ आश्रम का आधार है। वानप्रस्थ एक और अर्थ में भी महत्वपूर्ण है कि यह संन्यास में जाने की तैयारी का भी काल है, यदि व्यक्ति वानप्रस्थ में पुनः अपनी विद्या को बढ़ाकर समाज व राष्ट्र के हितकारी कार्यों को पूर्ण रूप से प्रारम्भ नहीं करता है तो आगे न तो संन्यास की योग्यता बन पाती है और न ही सर्वकल्याण की भावना विकसित हो पाती है। वानप्रस्थ का होना अत्यन्त आवश्यक है, समाज को संभालने के लिए भी और अपने परम लक्ष्य मोक्ष की ओर अग्रसर होने के लिए भी। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि अन्य आश्रमों में जहाँ विकार उत्पन्न हो गए हैं वही वानप्रस्थ का तो मानो लोप ही हो गया है। आज व्यक्ति वर्तमान जीविका के लिए विद्या भी प्राप्त कर लेते है, गृहस्थ में धन आदि भी अर्जित कर लेते हैं, लेकिन उसके बाद जीवन उसी में बिता देते है। वानप्रस्थ के महत्व को समझते ही नहीं या यह समझना चाहिए कि वानप्रस्थ क्या होता है यही नहीं पता है, अपितु सोचते हैं कि वानप्रस्थ की वर्तमान में कोई आवश्यकता ही नहीं है। और जहाँ शास्त्रोक्त सिद्धान्तों को पुनः धारण कर आगे बढ़ने का प्रयास किया जाना चाहिए वहाँ केवल अनुभव को ही सब कुछ मान लेते हैं। ऐसी स्थिति में जब वानप्रस्थ की व्यवस्थाएं ही समाप्त कर दी गई तो फिर संन्यास आश्रम तक पहुँचे कौन? और बिना आधार के यदि संन्यास धारण कर भी लिया तो फिर संन्यास की मर्यादा ही नहीं रहती है और वह बन जाता है केवल पलायनवाद या गेरुए वस्त्रों के प्रति सामान्य जन में सम्मान के भाव का दुरूपयोग मात्र। क्योंकि योग्यता के बाद ही संन्यास का महत्व होता है और तभी संन्यासी अपने कर्त्तव्यों का पालन कर पाने समर्थ होता है। जहां अन्य आश्रमी सभी बन सकते हैं, संन्यास के लिए तो ऋषियों ने सीधी–सीधी योग्यता निर्धारित की है। इसीलिए ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि सन्यास में दृढ़ वैराग्य और यथार्थ ज्ञान का होना ही मुख्य कारण है। ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास लेने के लिए भी ऋषि द्वारा वैराग्य और विद्या को ही आधार बनाते हुए लिखा है– यदि पूर्ण अखण्डित ब्रह्मचर्य, सच्चा वैराग्य और पूर्ण ज्ञान–विज्ञान को प्राप्त होकर ब्रह्मचर्याश्रम को पूर्ण कर ही के संन्यासाश्रम को ग्रहण कर लेवे।

जीवन जीने की ऐसी सुन्दर योजना जो वेद पर आधारित है हमारे राष्ट्र में जब तक धारण की जाती रही तब तक मानव मात्र ही नहीं प्राणी मात्र तक सुख का जीवन जीते रहे हैं, लेकिन अन्य वैदिक सिद्वान्तों के साथ–साथ इसमें भी ऐसा विकार उत्पन्न हो गया कि ब्रह्मचर्य आश्रम मात्र जीविकोपार्जन के लिए कौशल जुटाना रह गया, चाहे वह सभी नैतिकताओं की तोड़कर हो। गृहस्थ मात्र शारीरिक सुख के साधनों के एकत्रीकरण के लिए रह गया और वानप्रस्थ तो रहा ही नहीं व कहीं–कहीं संन्यास की परम्पराए रही तो मात्र पलायनवादी लोगों की शरण स्थली बन गया या कहीं विद्वान लोगों ने संन्यास लिया भी तो वे भी सर्वोपकार की अपेक्षा अपने–अपने मठों व आश्रमों के पोषण में ही लगे रहे।

इन्हीं परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने अन्य वैदिक सिद्धान्तों की तरह आश्रम व्यवस्था के प्रतिस्थापित करने के लिए बल दिया है। आज राष्ट्रोत्थान के लिए दृढ़ आश्रमियों की आवश्यकता है अर्थात् जो अपने–अपने आश्रम में दृढ़ होकर राष्ट्र निर्माण में लग सकें। ऋषि दयानन्द ने स्वयं भी संन्यास परम्परा का दृढ़ता से पालन किया है। जहाँ उनके काल में संन्यासी मठों आदि के निर्माण में लगे रहे वहीं ऋषि ने अपना जीवन सर्वोपकारक सिद्धान्तों को जन–जन में पहुँचने के लिए लगा दिया। आश्रम व्यवस्था को अपनाए बिना राष्ट्र कल्याण सम्भव नहीं है। बालकों को उत्तम शिक्षा की आवश्यकता है, जिसमें वे सहयोग व उन्नति के लिए प्रयास करें न कि मात्र दूसरों के शोषण के माध्यम से अपनी ही उन्नति में लगे रहें। गृहस्थों के लिए आवश्यक है कि अपने धन का उपयोग, अपने सामर्थ्य का उपयोग और अपने कौशल का उपयोग राष्ट्र निर्माण के लिए करें न कि मात्र अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए, वहीं गृहस्थ को वानप्रस्थ की आयु प्राप्त होने पर परिवार के कार्यों को युवापीढ़ी को सौंप कर राष्ट्र–निर्माण में लगें, लेकिन दुभार्ग्य यह है कि आज सबसे अधिक इसी की कमी है कि हमारे गृहस्थ न तो परिवार का मोह छोड़ते हैं और न ही परिवार छोड़कर समाज व राष्ट्रोत्थान में लगते हैं। और संन्यास का उत्थान तभी सम्भव होगा जब ये तीनों आश्रम व्यवस्थित हो जाएं।

आर्यो! आश्रम व्यवस्था आर्यों के लिए प्रकाश स्तम्भ है। आर्यों के उत्थान के लिए इसका पालन आवश्यक है। हमें यदि राष्ट्र निर्माण का कार्य तीव्रता से बढ़ाना है तो अपने इन कर्त्तव्यों का पालन करना ही होगा, तभी ऋषि दयानन्द की अकांक्षा को हम पूरा कर पाने में सक्षम होंगे।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली (आश्रम) रोहतक में

आर्य समाज का सोशल मीडिया सेन्टर बनकर तैयार

14 मार्च को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में सभा मंत्री प्रो.विट्ठलराव आर्य, युवा समाज सेवी विशाल मलिक ने नए स्टूडियो का उद्धघाटन किया।

31 दिसंबर 2021 तक दुनिया के 36 देशों में वेदों का ज्ञान पहुंचाने का संकल्प, अगले चरण में समाज के हर वर्ग के लिए तैयार होंगे वैदिक साहित्य के प्रेरक और रोचक कार्यक्रम

आर्यजनों के लिए खुशखबरी है। अब उन तक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के विचार और वेदों के सिद्धांत आसानी से पहुंचेंगे। इसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन में स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली में 25 लाख की लागत से सोशल मीडिया प्लेटफार्म तैयार है। स्वामी इंद्रवेश की जयंती के अवसर पर 14 मार्च को मिशन आर्यावर्त के नए स्टूडियो का उद्‌घाटन किया गया। 31 दिसंबर 2021 तक दुनिया के आर्य समाज के प्रभाव वाले सभी 36 देशों तक वेदों का ज्ञान पहुंचाने का संकल्प है। प्रकल्प के अगले चरण में समाज के हर वर्ग के लिए वैदिक साहित्य के प्रेरक और रोचक कार्यक्रम किए जाएंगे। ताकि उन पर अमल करने से व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन यात्रा आसान हो सके।

कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर बच्चों के 3 कार्यक्रमों का प्रसारण 12 जून से

मिशन आर्यावर्त के तहत संचालित सोशल मीडिया प्रोजेक्ट के डायरेक्टर ब्रह्मचारी दीक्षेंद्र आर्य ने बताया कि कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए 3 कार्यक्रमों वेद पर कौन बनेगा वैदिक, गीता पर कौन बनेगा बालकृष्ण और सत्यार्थ प्रकाश पर कौन बनेगा बाल सत्यार्थी की रिकार्डिंग शुरू कर दी गई है। स्वामी इंद्रवेश जी की पुण्यतिथि 12 जून से इसका प्रसारण आरंभ होगा। इसमें संबंधित विषय पर प्रश्नोत्तर होंगे। विजेता बाल प्रतिभाओं को उपाधियों और पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा।

ई–लाइब्रेरी में उपलब्ध होगा वैदिक साहित्य

मिशन आर्यावर्त की ओर से ई–लाइब्रेरी विकसित करने पर काम चल रहा है। कोशिश दिसंबर 2021 तक ई–लाइब्रेरी के जरिए वैदिक साहित्य पीडीएफ रूप में उपलब्ध कराना है। मकसद शोधार्थियों सहित जिज्ञासु आर्यजनों को महर्षि दयानंद के विचारों व वेद ज्ञान से हरदम अपडेट रखना है। फिलहाल वेद विचार व राष्ट्र प्रेम पर आधारित 100 गीतों की श्रृंखला की रिकार्डिंग कर ली गई है।

वैदिक विचारों–सिद्धांतों पर अमल से आसान होगी जिंदगी की मुश्किलें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि वेद ही वास्तविक और शाश्वत ज्ञान का स्रोत हैं। जो मनुष्य का सदैव मार्गदर्शन करते हैं। इनके मंत्रों में मिलावट की गुंजाइश असंभव है। क्योंकि इनमें एक मात्रा तक का हेरफेर जांचने की 8 अलग अलग शैलियां है। इसीलिए स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली में सोशल मीडिया का प्रकल्प तैयार किया गया है। लक्ष्य वैदिक सिद्धांतों के कल्याणकारी सिद्धांतों से दुनिया को परिचित कराना है। इससे आम जिंदगी की भी मुश्किलें आसान होगीं। अगले चरण में बड़े, बच्चे, महिलाएं और समाज के हर वर्ग के लिए रोचक और प्रेरक कार्यक्रम तैयार करके उनका प्रसारण करना है।

भविष्य में बड़े चैनल का रूप लेगा मिशन आर्यावर्त – प्रो. विट्ठल राव आर्य

सार्वदेशिक सभा के महामंत्री व आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश तेलंगाना के प्रधान प्रो.विट्ठलराव आर्य ने कहा कि मिशन आर्यावर्त आज के समय में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला वैदिक चैनल है। भविष्य में इसको बड़े चैनल का रूप प्रदान किया जाएगा। इसके लिए मैं स्वयं व सभा हर सम्भव मदद करेगी।

सोशल मीडिया आज की आवश्यकता – विशाल मलिक

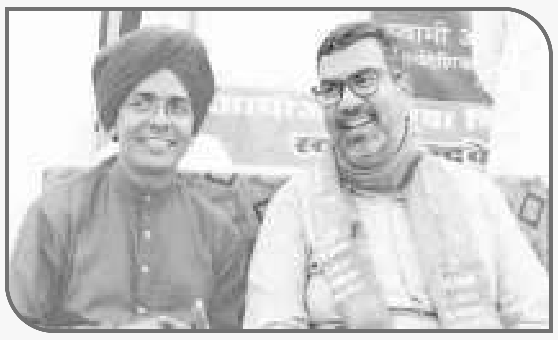

युवा समाज सेवी व आश्रम के विशेष सहयोगी विशाल मलिक ने कहा कि आर्य समाज को प्रचार के लिए सोशल मीडिया को माध्यम बनाना एक अनुकरणीय प्रयास है। इसके माध्यम से देश दुनिया मे वैदिक विचारधारा को जन जन तक पहुचाने में मदद मिलेगी।'''

दैनिक सोशल मीडिया का हिस्सा बनेगी 'मिशन आर्यावर्त एप'

मिशन आर्यावर्त अप्प के माध्यम से महाभारत, रामायण, चाणक्य, उपनिषद, पंचतंत्र, वेद, योग व आध्यात्मिक विषयों पर सुविचार भी उपलब्ध करवाए जाएंगे जिन्हें स्कूलों मे प्रयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के लिए भी इन सुविचारों का प्रयोग किया जा सकता है। इसके पीछे उद्देश्य केवल प्राचीन सनातन वैदिक संस्कृति को सहेज कर रखना है।।

देश व विदेश के विद्वानों के ठहरने की व्यवस्था की जा रही है।

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ में इसी प्रकल्प से जोड़कर 6 कमरे तैयार किये गए हैं जिनमे समय समय पर देश व विदेश से आमंत्रित वैदिक विद्वानों के ठहरने की व्यवस्था की गई है।

शिक्षकों को प्रोत्साहित करेगा मिशन आर्यावर्त

समाज मे शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए सरकारी व गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों में कार्य करने वाले आदर्श शिक्षकों के जीवन के अनुभवों को भी मिशन आर्यावर्त्‌त के माध्यम से प्रसारित किया जाएगा ताकि अन्य लोग उन से प्रेरणा लें व समाज निर्माण में अहम भूमिका निभाएं।

मिशन आर्यावर्त के लिए वेद प्रचार रथ भेंट

नाड़ी वैद्य कायाकल्प रोहतक के संस्थापक व विश्व प्रसिद्ध वैद्य सत्यप्रकाश आर्य ने मिशन आर्यावर्त के लिए (वेद प्रचार रथ) एलेंट्रा गाड़ी भेंट की। उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी से चर्चा करके स्वामी आदित्यवेश जी की भिक्षा की झोली में गाड़ी की चाबी डाल दी। उन्होंने कहा कि मिशन आर्यावर्त के लिए किसी भी प्रकार का सहयोग करने के लिए वो तत्पर रहेंगे। उन्होंने इससे पूर्व एक एयर कंडीशन भी भेंट किया था।

इस आयोजन का कुशल संचालन कर रहे ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी ने जयघोषों तथा गगनभेदी नारों से लोगों का उत्साह बढ़ाया तथा सरकार तक अपनी बात पहुँचाने का सफल प्रयास किया। प्रदर्शन तथा जनसभा के उपरान्त प्रो. विट्ठलराव आर्य के नेतृत्व में पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी ओमवेश जी तथा श्री रामसिंह आर्य जी ने राष्ट्रपति जी को ज्ञापन भी सौंपा। प्रदर्शन अत्यन्त सफल रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।